स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) तृतीय खण्ड
(अष्टम पत्र - साहित्य सिद्धांत एवं आलोचना)
पाश्चात्य साहित्य चिन्तन - बिंब

-डॉ॰ मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे॰के॰कॉलेज

बिंब को अंग्रेजी में 'इमेज (Image) कहते हैं। बिंब एक प्रकार का भावगर्भित शब्द-चित्र है जो सिर्फ हमारी आंखों को ही तृप्त नहीं करता बल्कि अन्य इन्द्रियों को भी सुख पहुंचाता है। भाव जगाना उसका प्रमुख कार्य है। डॉ॰ नगेन्द्र के शब्दों में 'काव्य-बिंब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस-छवि है जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है।" कवि केदारनाथ सिंह ने लिखा है - "'बिम्ब' वह शब्द-चित्र है जो कल्पना के द्वारा ऐन्द्रिय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है।"

डॉ॰ नगेन्द्र ने बिंबों के वर्गीकरण के लिए कुछ आधार निश्चित किए हैं — (I) ऐन्द्रिय आधार पर
(II) सर्जक कल्पना के आधार पर
(III) प्रेरक अनुभूतिपरक बिंब
(IV) काव्यार्थ की दृष्टि से
(V) काव्य दृष्टिपरक बिंब

(1) ऐन्द्रिय आधार पर - चाक्षुष बिंब - दृश्य, आकार वाले होते हैं। काव्य में इसका प्रयोग अधिक होता है। श्रव्य बिंब - ऐसे बिंब का ग्रहण कानों के द्वारा होता है। छंद, लय, तुक, आदि श्रव्य बिंब के अन्तर्गत आते हैं।
स्पृश्य बिंब - इस प्रकार के बिंब में स्पर्शजन्य संवेदनाओं का निर्माण होता है। कोमल, कठोर, कर्कश आदि।
गंध बिंब - इस प्रकार के बिंब काव्य रचना में कम दिखायी देते हैं। बिहारी की रचनाओं में यह बिंब अधिक दिखता है। ये बिंब गंध के प्रतीक पुष्प के द्वारा अभिव्यक्त होते हैं।
स्वाद बिंब - आस्वाद परक बिंब का उदाहरण: 'मीठी लगै अंखियान लुनाई'। इसमें 'मीठी' स्वाद है।

(2) सर्जक कल्पना के आधार पर - स्मृति बिंब - ऐसे बिंब अतीत के अनुभवों पर आधारित होते हैं।
कल्पित बिंब - स्वच्छन्द कल्पना में प्रयुक्त होने वाले कवि प्रौढोक्ति सिद्ध कल्पित बिंब कहलाते हैं।

(3) प्रेरक अनुभूतिपरक बिंब - सरल अनुभूतियों से प्रेरित बिंब सरल बिंब कहलाते हैं। जैसे - 'लज्जा ने घुंघट डाला।

मिश्र बिंब - मिश्र अनुभूतियों से प्रेरित होते हैं। जैसे - 'लाली बन सरस कपोलों में आँखों में अंजन सी लगती' इसी प्रकार जटिल बिंब, समाकलित बिंब (समकालिन अनुभूतियों से प्रेरित) राम की शक्ति पूजा में समाकलित बिंब है।

(4) तात्पर्य की दृष्टि से 'एकल' और 'संश्लिष्ट बिंब' आते हैं। ऐसे बिंब जो अपने में स्वतंत्र और अन्य बिंबों के पारस्परिक संबंधों से मुक्त होते हैं, एकल बिंब कहलाते हैं, तथा अनेक बिंब जब परस्पर संश्लिष्ट होते हैं वहाँ संश्लिष्ट बिंब होता है। जैसे - पंत की कविता - 'नौका विहार'

(5) काव्यगत दृष्टिपरक बिंब के अन्तर्गत 'वस्तुपरक' और स्वच्छंद बिंब आते हैं। वस्तुपरक बिंबों में यथार्थ चित्र चित्रित होते हैं। जबकि स्वच्छंद बिंबों में कल्पना और सौंदर्य के चित्रों का महत्व होता है।

वस्तुतः बिम्ब का कोई सामान्य लक्षण भी यदि नहीं हो फिर भी कविता में उसकी पहचान निर्भीक रूप से की जा सकती है। प्रसाद जी की सौंदर्य बिंब -

" और उस मुख पर वह मुसकान
रक्त किसलय पर ले विश्राम
अरुण की एक किरण अम्लान
अधिक अलसायी हो अभिराम।,,

यहाँ 'कामायनी' महाकाव्य में श्रद्धा की मुसकान को बिम्बित किया गया है। मुसकान का अस्तित्व निराली शोभा है। इसलिए उसे स्वतंत्र रूप से बिम्बित करने के लिए मुख को आधार और मुसकान को आधेय बनाया गया है।

Scanned with CamScanner